ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-1* April- 2017
Anthology : The Research

संगीत में भजन गायन

सारांश

भजन सुगम संगीत की एक शैली है। इसका आधार कुछ भी हो सकता है। सामान्यतया उपासना की सभी पद्धतियों में भजन गायन किया जाता है, जो हिन्दु आमतौर पर अपने इष्ट की आराधना में गाते हैं।

मुख्य शब्द : भजन, स्वर साधना,गायन ।

राजेन्द्र माहेश्वरी
व्याख्याता,
संगीत विभाग
राजकीय कला कन्या
महाविद्यालय, कोटा
राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

भजन गायन शैली भारतीय संगीत में एक विशिष्ठ शैली है। पिछले कुछ दशकों से भजन गायकी हिन्दुस्तानी संगीत समाज में एक प्रतिष्ठा पा चुकी है। भजन गायको को अब संगीत सम्मेलनों में बुलाया जाता है। उनकी कैसेट, सीडी आदि भी बन रही है। भारतीय सिनेमा में भी विपत्ती के समय मंदिर में भजन गाने दृश्य आम है। अनके कस्बों, मोहल्लों में भजन मण्डलियों में अब उसी सिनेमाई अंदाज को अपना लिया है। लगता है चौराहे–चौराहे पर भक्ति की गंगा बह रही है, लेकिन इन सबसे किसी आस्तिक समाज का निर्माण न होना था–न हुआ है।

'भजन' का अर्थ

गोपालपूर्वातापिन्युषद में लिखा – किं नाम भजनं, भजननाम रसनं।

सगुण ब्रह्म के अनेकानेक लीलओं का गायन, उनके रचना शिल्प के साथ विभिन्न अवसरों पर, पर्वों और देव स्थानों में उन काव्य रचनाओं की प्रस्तुति मोटे तौर पर भजन की संख्या पा गयी, क्योंकि लीलाओं या महिमा का रस लेने की प्रक्रिया इसमें निरन्तर निहित थी। भारतीय शास्त्रीय संगीत जो ध्रुपद बहुल था–भजन को अपने भीतर समेटने लगा। वृन्दावन ऐसे गायन का केन्द्र था। वृन्दावन में भजन गायन को 'समाज संगीत' कहा गया है। चेतन्य महाप्रभू के षड़गोस्वामियों में प्रमुख आचार्य जीव गोस्वामी ने कहा था– रस की निष्पत्ति किस व्यक्ति में होती है. भक्ति काव्य को पड़ने वाले या उसका गायन करने वाला। जहां ऐसे भक्ति काव्य का पाठ अथवा गान होता हो वही समाज है। इसी कारण भजन गायन समाज संगीत नाम से मान्य हुआ। भजन गायन को देव स्थानों में गाये जाने को हवेली संगीत की भी संज्ञा मिली। वहां गायकों ने अनेक पदों की रचना की– उन्हें राग रागनियों में निबन्धित किया, और अकसर उन भजनों के पूर्व उन रागों के नाम भी अंकित कर दिये। सूरदास अष्ठछाप के सिरमौर थे। कबीरपंथी, नानकपंथी, या अन्य निरगुणीया जमात के साधाकों के बीच भी इसी तरह के गायकों का वर्ग था। वह लोग प्रचलित गीतों की धुनों पर इन्हें गाते थे, जिनमें पूरे सप्तक के तीन या चार स्वरों का प्रयोग होता था। जो कोई विशिष्ट गायक होते थे वे 'रबाबी' कहलाते थे। नानक पथ के उदासीन सम्प्रदाय में अकसर यह रबाबी मिलते है।

वस्तुतः भारतीय स्वर साधाना की मूल बनावट आत्मनिवेदन, समर्पण, और परमशक्ति की कृपा प्राप्त और अंततः उसी में लय हो जाने की है। शब्द को संगीत की पूर्णतः तक सशक्त ढंग से पहुंचा देना भजन गायिकी का प्रबलतम पक्ष है। भजन की शब्दावली और उसमें प्रयुक्त स्वर समुदाय दोनों मिलकर एक विशिष्ट रस प्रक्रिया निर्मित करते है– जहां श्रोता को अपने भीतर के भावोद्वलनों में डूबने – उतरने का अभूतपूर्व आनंद मिलता है।

आधुनिक काल में जिन गायकों ने भजन शैली को प्रतिष्ठा दी और अपनी स्वर माधुरी से उसे लोक रंजक बनाया, उनमें अग्रणी–भारतीय संगीत के

आंदोलन के पुर्नजागरण के नायक स्व0 पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर थे, जिनके स्वरबद्ध किये हुये अनेक भजन आज भी गाये जाते है। 'रघुपति राघव राजाराम' उन्हीं की स्वर रचना है। इसी प्रकार सबसे पहले पंडित ओंकारनाथ ठाकुर ने अतिरिक्त भाव विहृलता के साथ ''मैया मौरी मै नहीं माखन खायो'' गाया। इनके अतिरिक्त पंडित विनायक राव पटवर्धन, पंडित नारायण राव व्यास, पुरूषोत्तम दास जलोटा आदि ने भजन गायकी को समृद्ध किया।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य संगीत में भजन गायन को रेंखांकित करना है संगीत की अनेक गायन शैलियां है। भजन गायन उनमें से प्रमुख शैली है। ईश्वर आराधना जब स्वरमय की जाती है तो उसका प्रभाव द्विगुणित हो जाती है। मेरे इस लेख से संगीत के अन्तर्गत भजन गायन शैली को समझने की एक नयी दिशा मिलेगी। परम्परा से लेकर आधुनिक भजन शैली के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।

निष्कर्ष

यह तमाम पक्ष भजन गायिकी के उस बुनियादी रिश्ते की तलाश करते है, जो शब्दों और स्वर के बीच गायन के किसी भी प्रत्यत्न से परम्परागत प्रयास से स्थापित होता है। शब्द ब्रह्म है– राधा और कृष्ण की तरह दो लीला रूप धारण करने पर भी वह मूलतः एक ही ब्रह्मानंद है। संगीत और शब्द मणिकांचन योग्य भजन गायिकी में सहज ही उपलब्ध होता है। इन्हीं कि योग्य से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। इसी पद्ति से वह ब्रह्मलीन हो जाता है और यहीं भजनानन्द है और यही ब्रह्ममानन्द है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गिरिश चन्द्र उप्रेति– भारतीय संगीत (1996)*
2. *तुलसी राम – देवांगन (1964)*
3. *गोविन्द राव राजूरकर – संगीत शास्त्र पराग (1984)*
4. *आमलदास शर्मा – भक्ति संगीत (1990)*